वैष्णव जन तो

वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीर पराई जाणे रे ।2।

पर दुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे ।

सकल लोक मां सहुने बन्दे, निन्दा न करे जे केनी रे ।

वाच काछ मन निश्छल राखे, धन धन जननी तेरी रे ।

वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीर पराई जाणे रे ।2।

सम दृष्टि ने तृष्णा त्यागी, पर स्त्री जेने मात रे,

जिह्वा थकी असत्य न बोले, पर धन नव झाले हाथ रे ।

मोह माया व्यापे नहि जेने, द्रढ़ वैराग्य जेना तन मा रे,

राम नामशुं ताली लागी, सकल तीरथ तेना तन मा रे ।

वण लोभी ने कपट रहित छे, काम क्रोध निवार्या रे,

भण नर सैयो तेनु दरसन करता, कुल एको तेर तार्या रे ।

वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीर पराई जाणे रे ।2।